Syntactic Theory by Geoffrey Poole

Chapter 1

READING GUIDE

MATERIAL PREPARED FOR NMRC, JNU & EKLAVYA,BHOPAL BILINGUAL PROJECT

BY

INDRANI ROY

NOVEMBER 2011

FIRST CHAPTER OF SYNTACTIC THEORY BY GEOFFREY POOLE

इस अध्याय में हम चॉमस्की के Generative Tradition की कुछ मुख्य बातों को जानेंगे. जैसे कि --

भाषायी क्षमता और निष्पादन (Competence and Performance)
व्याकरणिकता और स्वीकार्यता (Grammaticality and Acceptability
भाषा-अर्जन (Language Acquisition)
सार्वभौमिक व्याकरण (Universal Grammar)
नियम और प्राचलन (Principles and Parameters)
संरचना निर्भरता (Structure Dependency)

लेखक चॉमस्की से सहमत हैं कि भाषा विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान के तरह ही देखना चाहिए. चॉमस्की ये मानते हैं कि भाषा के बारे मेंएक अहम बात ये है कि हम लोग बात कर सकते हैं और एक दूसरे को एक दूसरे को समझ सकते हैं

<u>भाषायी क्षमता (कॉम्पिटेन्स) और निष्पादन (परफॉरमेन्स)</u>

भाषायी क्षमता यानी वह अन्दरूनी क्षमता जिसके कारण हम भाषा का प्रयोग कर पाते हैं. निष्पादन यानी भाषा का प्रयोग. चॉमस्की के अनुसार भाषा के सही अध्ययन के लिए हमें भाषायी क्षमता का अध्ययन करना चाहिए न की निष्पादन का. इसका कारण यह है कि सामान्य बातचीत में हम कई बार बोलते-बोलते रुक जाते हैं, कुछ बोलना शुरू करके कुछ और बोल जाते हैं. इसके अलावा आम बातचीत से हमारे भाषा व्यवहार करने की असली क्षमता का पता नहीं चलता. बेहतर तरीका यह है कि भाषायी क्षमता का अध्ययन किया जाए.

भाषायी क्षमता मूल भाषियों का अपने भाषा के बारे में वह ज्ञान है जो उन्हें बताता है कि उनकी भाषा में क्या बोला जा सकता है और क्या नहीं. चॉमस्की के अनुसार हमें इसी ज्ञान का अध्ययन करना चाहिए.

<u>व्याकरणिकता और स्वीकार्यता</u>

किसी भाषा में कौन से वाक्य को व्याकरणिक माने? व्याकरणिकता विचार करने के क्या मापदंड है? रोज़मर्रा की बातचीत में कई वाक्य होते है जो व्याकरणिक नहीं होते पर स्वीकार्य होते हैं. एसे वाक्य भी होते हैं जो कभी बोले नहीं गये हो पर व्याकरणिक होते हैं. और एसे भी वाक्य होते है जो व्याकरणिक तो होते है पर हमें स्वीकार नहीं होते.

फिर व्याकरणिकता का विचार कैसे करें? क्या ये माने कि जो वाक्य पहले सुने हुए हो वो व्याकरणिक है? नहीं क्योंकि वाक्य अनगिनत होते है और हर वक्त नये वाक्य बनाये जाते हैं.

क्या यह माना जाए कि जिस वाक्य का कोइ अर्थ निकले वह व्याकरणिक है? नहीं क्योंकी फिर यह वाक्य --

रंगहीन हरे विचार आग बबूला होकर सोते हैं

व्याकरणिक नहीं माना जाएगा. जबकी यह वाक्य अर्थहीन हो सकता है लेकिन व्याकरण की दृष्टि से सही है.

तो फिर क्या यह माने कि जो वाक्य दूसरे सही वाक्यों की तरह होते है वो व्याकरणिक है? नीचे दिये हुए वाक्यों को देखिये --

उसका वहाँ जाना पक्का है

उसका वहाँ जाना तय है

यह दोनो वाक्य एक जैसे हैं और सही हैं

अब देखिये --

वो पक्का जाएगी

वो तय जाएगी

यहाँ पहला वाक्य तो सही है पर दूसरा वाक्य नहीं जबकी दूसरा वाक्य बिल्कुल पहले वाक्य के तरह ही है. तो इसका मतलब ये हुआ कि हम व्याकरणिकता का विचार इस तरह भी नहीं कर सकते. व्याकरणिकता तय करने का एक ही तरीका है और वो है मूल भाषियों की अंतः-प्रज्ञा (intuition)

भाषा-अर्जन और सार्वभौमिक व्याकरण

चॉमस्की के मतानुसार हमारे भाषा का ज्ञान हमारे आस-पास के भाषायी वातावरण से नही बनता. बल्की ये ज्ञान हमारे मस्तिष्क के भाषा-अर्जन तंत्र से हमें मिलता है. किसी का भी भाषायी वातावरण इतना विविध नहीं होता कि वह उससे भाषा के हर प्रकार के व्यवहार को सीख पाये. इस अलावा एक तथ्य ये भी है कि हर कोई दुनिया के किसी भी भाषा को सीख सकता है. चॉमस्की यह मानते हैं कि इसका कारण सार्वभौमिक व्याकरण है. सार्वभौमिक व्याकरण यानी वो व्याकरण जो सभी भाषाओं का आधार है. इस सार्वभौमिक व्याकरण के कारण ही एक जापानी बच्चा, बंगाली परिवार में पला हो उसी तरह बांगला बोल पाएगा जैसे कि एक बंगाली बच्चा.

इसके अलावा चॉमस्की नियम और प्राचलन में भेद करते हैं

नियम और प्राचलन

नियम सार्वभौमिक होते हैं. जबकी प्राचलन भाषाओं को अलग-अलग रूप देते हैं. किस तरह प्राचलन हिन्दी और अंग्रेज़ी में फर्क लाते है देखिये --

बारिश हो रही हैं

इस वाक्य को अंग्रेज़ी में बोलेंगे --

It is raining

'it' शब्द का यहां कोई मतलब नहीं है. पर बिना इसके अंग्रेज़ी का यह वाक्य बोला नहीं जा सकता. 'it' यहां 'null suject' है. और इस प्राचलन को null subject parameter कहा जाता है.

<u>संरचना निर्भर नियम</u>

शब्दों को एक के बाद एक रखने से ही भाषा नही बन जाती. भाषा संरचना निर्भर होते हैं. इसका मतलब ये कि हर भाषा के संरचना के कुछ नियम होते है. अंग्रेज़ी के हां-ना उत्तर वाले प्रश्न का उदाहरण लीजिये --

The man is here
Is the man here?

इन दो वाक्यों से ये लगता है कि अंग्रेज़ी में प्रश्न
बनाने के लिये तीसरे शब्द is को आगे लाना पड़ता है. लेकिन फिर ये देखिये --

The man who is ill will go to the doctor
Is the man who ill will go to the doctor?

अब यहां is को आगे लाने पर प्रश्न नहीं बना. सही प्रश्न है

'Will the man who is ill go to the doctor?'

इस बात को समझने के लिये वाक्य संरचना को समझना पड़ेगा. 'The man who is ill will go to the doctor' इस वाक्य को दो भागों में बाट सकते है
-- The man who is ill जो कि subject है, और will go to the doctor जो कि predicate है. प्रश्न बनाने के लिये predicate के सहायक क्रिया (will) को आगे लाना पड़ेगा. यह नियम आप किसी भी वाक्य पर लगा कर देख सकते हैं हर वाक्य के लिये सही है.

प्रमाण के दूसरे स्रोत

क्रिस्टोफर एक स्वचिंतन (autism) के मरीज़ थे. उनकी खास काबिलियत यह थी कि वे बहुत आसानी से भाषाएँ सीख लेते थे. उन्हे करीब 20 भाषाएँ आती थी. ये उन्होने अपने आस-पास के लोगो से और व्याकरण की किताबों से सीखी थी. संरचना-निर्भरता पर क्रिस्टोफर को जांचने के लिये उन्हे और औसत भाषायी क्षमता वाले लोगो के एक नियंत्रित समूह को दो भाषाएँ सीखने को दी गई. इनमे से एक उत्तर अफ्रीका की बड़ी ही कठिन भाषा थी और दूसरी संरचना-स्वतंत्र नियमों से बनी एक कृत्रिम भाषा. अफ्रीकी भाषा सीखने में क्रिस्टोफर को तकलीफ हुई पर आख़िर में वो सीख पाये, जबकी कृत्रिम भाषा जो की संरचना-स्वतंत्र थी वो कभी नहीं सीख सके. दूसरी ओर नियंत्रित समूह के लोगों को दोनो भाषाएं सीखने में कठिनाई हुई पर वे कृत्रिम भाषा सीखने में सफल रहे.

सार्वभौमिक व्याकरण को समर्थन करने का एक महत्वपूर्ण कारण ये है कि अगर हम यह मान ले कि हर एक में यह व्याकरण पहले से मौजूद है और यह सभी भाषाओं में समान है तो हम भाषाओं का और गहरा अध्ययन कर पायेंगे, नहीं तो केवल अलग-अलग भाषाओं के वर्णन में ही अटके रह जायेंगे.

सार्वभौमिक व्याकरण और भाषाओं में हमेशा आवागमन होता रहता है. वो तर्क जो सार्वभौमिक व्याकरण से किसी भाषा के तरफ जाते हैं उन्हें हम संकल्पनात्मक कहेंगे और वो तर्क जो किसी भाषा से सार्वभौमिक व्याकरण की तरफ जाते हैं आनुभाविक कहे जायेंगे.

मान लीजिए कि सार्वभौमिक व्याकरण में X^i मौजूद है तो हम ये उम्मीद करेंगे कि हर भाषा में X^i मौजूद हो.

इसी तरह अगर किसी भाषा में X^i मौजूद हो तो हम ये आशा करेंगे कि वह सार्वभौमिक व्याकरण का भाग हो. या तो नियम के रूप में या प्राचलन.

Exercises for Geoffrey Poole Syntactic Theory First Chapter

1)

मैंने एक नया शब्द सीखा

मैंने एक नया वाक्य सीखा

इन दोनों में कौनसी परिस्थिति ज़्यादा मुमकिन है?

2)

कहां गये वे लोग?

गये वे कहां लोग?

वे लोग कहां गये?

गये वे लोग कहां ?

कहां वे लोग गये?

क्या आप के पास पेन है?

आप के पास पेन है क्या ?

आप के पास क्या पेन है?

आप के पास पेन है क्या ?

आप के क्या पास पेन है?

इन वाक्यों को देखकर क्या आप बता सकते हैं कि प्रश्नवाचक शब्द किधर लगाने पर सही लगते है? क्या आप इसका कोई नियम बता सकते हैं?

3)

लाल-पीले गीत नरम रास्ते पर दौड़ रहे हैं क्या?

हरा गुब्बारा गोल-गोल नाच रहा है

स्ट्रॉबेरी आँखें देखती क्या हैं?

मेरेको नींद आ रही है

इन वाक्यों को देखकर क्या आप बता सकते हैं कि हिन्दी में कौनसा वाक्य गलत है और ये वाक्य क्यों गलत है?

4)

मान लीजिये आप अपने बांग्ला भाषी दोस्त को हिन्दी सिखा रहे है? क्योंकी बांग्ला में स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों के लिये एक ही तरह के क्रिया का इस्तेमाल किया जाता है इसलिये आपके दोस्त इस प्रकार के वाक्य बोल सकते हैं --

राधिका अच्छा खाना पकाता है

आप इस वाक्य में क्या गलती निकालेंगे? सही वाक्य बताइये.

अब मानिये कि आपने अपने दोस्त को हिन्दी मे सही वाक्य बताया. उसके बाद उन्होनें एक और वाक्य बनाया --

राधिका ने अच्छा खाना पकाई

क्या ये वाक्य सही है. अगर गलत है तो आप अपने दोस्त को सही वाक्य बनाने के लिये क्या नियम बतायेंगे?

5)

पांच वाक्य बनाइये जो आपने कभी नहीं सुने हो.